International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

शतपथ ब्राह्मण का विभिन्न दृष्टियों से महत्त्व

राजेश कुमार
शोधार्थी, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

शुक्ल यजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण वैदिक वाङ्मय का महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रन्थ है जिसका मानवीय जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर इसकी विभिन्न दृष्टियों से महत्ता के विषय में चर्चा की गई है।

मूल शब्द : शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, माध्यन्दिन, अतिप्राचीन, समालोचक, पूर्वापेक्षा, मैक्डॉनल, दार्शनिक, आध्यात्मिक, विज्ञान, उपाख्यानों, साहित्यिक, तुलनात्मक धर्म–विज्ञान, ऐतिहासिक, प्रेरणादायक स्रोत, साङ्गोपांग, दर्शपौर्णमास, जगन्मंगलसाधिका, कर्मकाण्डीय, राजा सत्राजित, जलप्लावन, पौराणिक, धर्मोपदेश, जिज्ञासुओं, पाञ्चाल, सदानीरा, राहुगण, कपिलवस्तु, दुर्बोधता, संवलित तथा वैदिक ऐतिह्य आदि।

शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ – काण्व एवं माध्यन्दिन उपलब्ध हैं। इन दोनों शाखाओं के दो ब्राह्मण ग्रन्थ – (क) काण्व शतपथ ब्राह्मण, (ख) माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण। इन दोनों के काण्डगत विषयों में विभिन्नता हैं, जिसका विवरण आगे प्रस्तुत किया जाएगा। शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित शतपथ ब्राह्मण का अपनी विषय–वस्तु के विस्तार के कारण ब्राह्मण ग्रन्थों में अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कीथ और ओल्डनवर्ग जैसे विद्वानों का कथन है कि यह ब्राह्मण अतिप्राचीन है, किन्तु मैक्डानल ने शतपथ को इसकी भाषा एवं शैली के दृष्टिकोण से अतिप्राचीन नहीं माना है। उनके अनुसार शतपथ ब्राह्मण की भाषा अधिक विकसित है, जो अन्य ब्राह्मणों से पुरानी नहीं हो सकती है। प्रायः सौ अध्याय होने के कारण ही इस ग्रन्थ का नामकरण शतपथ हुआ होगा। अनेक समालोचकों का विचार है कि इस ब्राह्मण का नामकरण बाद में हुआ होगा क्योंकि इसमें पहले 66 ही अध्याय थे तथा 34 अध्याय बाद में जोड़े गए, जिसकी

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भाषा शैली पूर्वापेक्षा कुछ अधुनातन–सी है। शतपथ ब्राह्मण को अपनी उदात्त विषय–वस्तु के कारण विश्व का महान ग्रन्थ माना जा सकता है। इस विशाल ग्रन्थ पर महत्त्वपूर्ण सायण–भाष्य उपलब्ध है, जो अपने में स्वयं ग्रन्थ होने की क्षमता रखता है। इस ग्रन्थ पर पाश्चात्य विद्वानों में एगलिङ्ग का आंग्ल अनुवाद तथा एलबेर्त वेबर महोदय का संशोधन सहित प्रकाशन कार्य सराहनीय है।

शतपथ ब्राह्मण का महत्त्व

शतपथ ब्राह्मण का अपनी विषयवस्तु के कारण ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। सम्पूर्ण ब्राह्मण साहित्य में शतपथ ब्राह्मण सर्वाधिक विशाल रचना है। मैक्डॉनल के अनुसार ब्राह्मण साहित्य में ही नहीं अपितु विशालता की दृष्टि से सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के पश्चात् तृतीय स्थान शतपथ का है।[1] शत०ब्रा० का महत्त्व कई दृष्टियों से विचारणीय है –

शतपथ–ब्राह्मण का दार्शनिक महत्त्व

शतपथ–ब्राह्मण अनेकविध विषयों से आपूर्ण है। तदनुसार इस ब्राह्मण–ग्रन्थ में दार्शनिक विषयों से सम्बन्धित विवेचन भी उपलब्ध होता है। यद्यपि यह ब्राह्मण भाग मुख्य रूप से दार्शनिक ग्रन्थ नहीं हैं तथापि इसमें सृष्ट्युत्पत्ति जैसे गम्भीर विषयों का विवेचन भी प्राप्त होता है। ब्राह्मण–ग्रन्थ में प्रजापति को सृष्टि के प्रमुख कारक के रूप में बताया गया है –

(अ) प्रजापतिर्ह वाऽइदमग्रऽएक एवास। स ऐक्षत कथं नु प्रजायेयेति सोऽश्राम्यत् स तपोऽतप्यत्।[2]

(आ) प्रजापतिर्वाऽइदमग्रऽआसीत्।[3]

(इ) प्रजापति वाऽएतेनाग्रे यज्ञेनेजे।[4]

(ई) प्रजापतिर्ह वाऽइदमग्रऽएक एवास।[5]

अतः शतपथ–ब्राह्मण में ऐसे अनेक सन्दर्भ प्राप्त होते हैं जो ग्रन्थ में विद्यमान दार्शनिकता की सूचना देते हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

दार्शनिक दृष्टि से

वस्तुतः ब्राह्मण ग्रन्थों में उस दर्शन का अभाव है, जिसका विकास उपनिषदों में हुआ है। ब्राह्मणों के दर्शन को कर्मकाण्डीय दर्शन कहा जा सकता है। श०ब्रा० के कर्मकाण्डीय दर्शन के ऐसे अनेक तथ्य मिलते हैं, जो दार्शनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, जो इस प्रकार हैं –

(क) श०ब्रा० में बौद्ध दर्शन की विचारधारा के बीच निहित हैं। बौद्ध धर्म के पारिभाषिक शब्द अर्हन् श्रमण, प्रतिबुद्ध आदि इसी ब्रा० से लिए गए प्रतीत होते हैं। श०ब्रा० और बौद्ध धर्म का कुछ सम्बन्ध इससे भी प्रकट होता है कि श०ब्रा० की गुरु परम्परा में गौतमों का पौनः पुन्येन उल्लेख है। कपिलवस्तु के शाक्यों का वंशनाम 'गौतम' था। इसी वंश में बुद्ध का जन्म हुआ, जो गौतम कहलाते थे।

(ख) श०ब्रा० में कतिपय उल्लेख सांख्य दर्शन के प्रारम्भ के संकेतक हैं, क्योंकि उसमें अनेकशः 'आसुरी' गुरु का उल्लेख हुआ है, जो सांख्य दर्शन के प्रतिपादक हैं।

(ग) श०ब्रा० में विश्ववैक्य के सिद्धांत का प्रतिपादन अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा विस्तार से किया गया है। सम्भवतः इसीलिए इस ब्राह्मण का परिशिष्ट (बृहदारण्यकोप–निषद्) समस्त उपनिषदों में मूर्धन्य है। इस सम्बन्ध में विन्टरनिट्ज महोदय ने लिखा है –

''जैसा कि शाण्डिल्य ने वर्णित किया है कि उपनिषदों के मौलिक सिद्धांत भी श०ब्रा० में पहले से ही विद्यमान हैं।''[6]

आध्यात्मिक दृष्टि से

आध्यात्मिक दृष्टि से यज्ञों का महत्त्व प्रतिपादित करने का गौरव शतपथ ब्राह्मण को ही दिया जाना चाहिए। यज्ञ के आध्यात्मिक रहस्य का पूर्ण संकेत इस ब्राह्मण में पाया जाता है। मण्डल ब्राह्मण (दशम मण्डल) सूर्य के आध्यात्मिक रूप को दिखलाने में जितना समर्थ है, उतना ही समर्थ वह भी भाग है जिसमें यज्ञ के अवान्तर अनुष्ठान कहीं प्रजापति के और कहीं विष्णु के प्रतीक रूप में उल्लिखित किए गए हैं। यज्ञ कर्म

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

के भीतर नाना कर्मों का अनुष्ठान पाया जाता है और वह भी एक विशिष्ट क्रम से सम्पन्न होता है। शतपथ ब्राह्मण में इस क्रम के प्रत्येक पदार्थ की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए बड़ी ही उदात्त और प्राञ्जल व्याख्या की गयी है। भौतिक याग एक प्रतीकात्मक व्यापार है। अन्तर्याग तथा बहिर्याग में पूर्ण सामञ्जस्य और आनुरूप्य है। अग्नि समिन्धन होने पर जो आहुतियाँ प्रथमतः दी जाती हैं – मन के लिए पहली आहुति 'पूर्वाधार आहुति' कहलाती है और वाक् के लिए दूसरी आहुति 'उत्तराधार आहुति'। भौतिक रथ को ले चलने के लिए जैसे दो अश्वों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार यज्ञ चक्र को खींचने के लिए मन और वाक् की आवश्यकता होती है। मन किसी वस्तु का प्रथमतः संकल्प करता है, तब वाक् वचन व्यापार के द्वारा उसका प्रतिपादन करती है। मन वाक् के संयोग के बिना यज्ञ जैसे अध्यात्म कर्म का यथार्थ सम्पादन असम्भव है। इसी प्रकार दोनों आहुतियों की निष्पत्ति क्रमशः सुव और सुक् नामक पात्रों के द्वारा की जाती है। इस विश्व के भीतर दो प्रधान तत्त्व हैं – अग्नि और सोम (अग्निषोमात्मकं जगत्)। अग्नि है अन्नाद (अन्न का भक्षण करने वाला, पुरुष तत्त्व) तथा सोम है अन्न (उपभोग्य तत्त्व, स्त्री तत्त्व)। इन तत्त्वों का यथार्थ मिलन और सामञ्जस्य होने पर ही विश्व का कल्याण सम्पन्न होता है। अग्नि में सोमरस की आहुति देने का यही अभिप्राय है कि अन्नाद तथा अन्न के परस्पर सम्बन्ध से जगन्मंगलसाधिका सामग्री प्रस्तुत होती है। उपनिषदों में यही तत्त्व रयि और प्राण के नाम से उल्लिखित है। यज्ञ की प्रत्येक छोटी से छोटी क्रिया के भाव को इस मूलतत्त्व की पीठिका में पूर्णतया अभिव्यक्त करने का श्रेय शतपथ ब्राह्मण को है सच तो यह है कि यज्ञ का विधान साधारण दृष्टि से निर्जीव, आडम्बर सा प्रतीत होता है, परन्तु शतपथ की व्याख्या के अनुशीलन से उसके अन्तर्निहित तत्त्वों का उन्मीलन तथा उदात्तरूप ज्ञात होता है।[7]

लुई रेनू ने अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा शतपथ ब्राह्मण की महत्ता को अपने शब्दों में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है –

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

''अन्य ब्राह्मणों की तुलना में शतपथ ब्राह्मण की शैली बहुत विस्तृत एवं उत्तम है। इसके वर्णन बहुत अधिक एवं एक उचित क्रमबद्धता में संकलित हैं, जो कर्मकाण्ड से सम्बन्धित हैं। कुछ गद्यांश (प्रमुख रूप में दशम काण्ड के) उपनिषदों की विचारधारा को प्रतिबिम्बित करते हैं। शतपथ ब्राह्मण में दिए गए तर्क अन्य ब्राह्मणों की तुलना में अधिक सशक्त एवं उत्तम है।[8]

विज्ञान की दृष्टि से

विज्ञान के सूक्ष्म एवं विस्तृत अध्ययन के लिए शतपथ ब्राह्मण ही सर्वप्रथम साधन है। शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयी शाखा ही यज्ञीय विधि के विज्ञान में अपनी सर्वोपरिता का गौरव रखती है। यजुर्वेद में प्रतिपादित यज्ञों की विधियों का विस्तृत विवरण असाधारण परिपूर्णता के साथ शतपथ ब्राह्मण[9] में ही मिलता है। विधि विधानों के विशाल राशिरूप शतपथ ब्राह्मण में ही यज्ञ यागों का सांगोपांग एवं पूर्ण विवरण दिया गया है जबकि अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में अत्यल्प विवरण मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में विभिन्न यज्ञों जैसे – हविर्यज्ञ, दर्शपौर्णमास, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, सोमयाग, पञ्चमहायज्ञ, वाजपेय, राजसूय आदि का सांगोपांग एवं पूर्ण विधि अनुसार वर्णन मिलता है। यज्ञों में नाना रूप एवं विविध अनुष्ठान जिस सूक्ष्मता के साथ शतपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत किए गए हैं उतने किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं। शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ कर्मों के निमित्त यजुष मन्त्रों का क्रमानुसार विनियोग निर्दिष्ट है। कात्यायन श्रौतसूत्र के लिए यह मूल स्रोत का कार्य करता है।

उपाख्यानों की दृष्टि से

शतपथ ब्राह्मण के उपाख्यान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं, इनका ऐतिहासिक, धार्मिक तथा साहित्यिक दृष्टियों से बहुत महत्त्व है। इतनी अधिक संख्या में उपाख्यान अन्य किसी ब्राह्मण में नहीं मिलते। यद्यपि कोई एक उपाख्यान अधिक विस्तार से किसी अन्य ब्राह्मण में भी मिल सकता है यथा – शुनः शेप का उपाख्यान ऐतरेय ब्राह्मण[10] में है किन्तु इतने महत्त्वपूर्ण उपाख्यानों का एकत्र संयोग अन्यत्र अप्राप्य है। शतपथ ब्राह्मण में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

दुष्यन्त शकुन्तला भरत की कथा, राजा सत्राजित् और धृतराष्ट्र की कथा, पुरुरवा उर्वशी की कथा आदि आख्यान बड़े रोचक ढंग से वर्णित हैं। ग्रन्थ के प्रथम काण्ड के अन्त में वर्णित मनु मत्स्य की कथा बहुत ही दार्शनिक है, जो सृष्टि उत्पत्ति से सम्बन्धित है।

शतपथ ब्राह्मण में पौराणिक उपाख्यानों के साथ ही ऐतिहासिक उपाख्यानों की भी भरमार है। कौरव राजा जनमेजय का सर्वप्रथम उल्लेख इसी ब्राह्मण में मिलता है।[11] पूर्व में ब्राह्मण धर्म के प्रसार के इतिहास को बताने वाला उपाख्यान भी इसी ब्राह्मण में हैं।[12] विश्व के प्रत्येक धर्म में प्राप्त जलप्लावन के उपाख्यान का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वप्राचीन रूप शतपथ ब्राह्मण में ही देखने को मिलता है। ऋग्वेद में कथा का स्रोत मात्र ही मिलता है, पूरी कथा नहीं। वेद में जो उपाख्यान स्रोत रूप में प्राप्त हैं तथा पुराणों में जिनका काल्पनिक विकास मिलता है, उन उपाख्यानों की मध्यस्थ कड़ी शतपथ ब्राह्मण में ही उपलब्ध होती है।[13] अतः वैदिक एवं पौराणिक दोनों ही प्रकार के उपाख्यानों के अध्येताओं के लिए शतपथ ब्राह्मण का अध्ययन अपरिहार्य है।

साहित्यिक महत्त्व

शतपथ ब्राह्मण के साहित्यिक महत्त्व की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। साहित्यिक दृष्टि से इस ब्राह्मण का महत्त्व इस प्रकार है –

(क) शतपथ ब्राह्मण ब्राह्मण साहित्य की प्रसन्न उदात्त और विशद गद्यशैली का आदर्श उपस्थित करता है। न कहीं दुर्बोधता है और न समासबहुलता। उदाहरण के लिए – ''अमेध्यो वै पुरुषः यदनृतं वदति। तेन पूतिरन्तर्तः। मेध्या वा आपः मेध्यो भूत्वा व्रतमुपयानिति।''[14] में शैली की सरलता द्रष्टव्य है।

(ख) यह ब्राह्मण पश्चाद्वर्ती लौकिक संस्कृत के कवियों के लिए रामायण और महाभारत के ही समान उपजीव्य बन गया। रामायण और महाभारत का शतपथ ब्राह्मण से कुछ सम्बन्ध अवश्य प्रतीत होता है, क्योंकि महाभारत के विजयी पाण्डवों का शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है। यहाँ इन्द्र का वाचक अर्जुन शब्द महाभारत में अर्जुन की इन्द्र से उत्पत्ति की धारणा का आधार है। जलौध विषयक महाभारत आख्यान शतपथ ब्राह्मण में

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

ही सर्वप्रथम आया है। रामायण महाकाव्य में आये हुए राजा वे ही जनक हैं जिनका शतपथ ब्राह्मण में विदेहपति के रूप में कई बार उल्लेख किया गया है।

(ग) विशाल पुराण साहित्य में उपलब्ध कतिपय कथाओं का आधार शतपथ ब्राह्मण ही था।

(घ) महाकवि कालिदास के विख्यात दो नाटकों – विक्रमोर्वशीयम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में ही उपलब्ध होते हैं।

इस प्रकार शतपथ ब्राह्मण की साहित्यिक महत्ता के सम्बन्ध में कही हुई मैक्डोनल की यह उक्ति सर्वथा सत्य है – ''शतपथ ब्राह्मण महत्त्वपूर्ण तथ्यों और विवरणों की खान है।''[15]

तुलनात्मक धर्मविज्ञान की दृष्टि से

विश्वधर्म तथा तुलनात्मक विज्ञान के अध्ययन के लिए शतपथ ब्राह्मण की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। वैदिक धर्म का क्रियात्मक स्वरूप यज्ञ आधारित था। याज्ञिक धर्म का सांगोपांग अध्ययन शतपथ के अतिरिक्त अन्य किसी भी अकेले ब्राह्मण द्वारा किया जाना असम्भव है। तत्कालीन धर्म के क्रियात्मक एवं दार्शनिक चिन्तनात्मक दोनों पक्षों का समुचित विवरण शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से

ऐतिहासिक दृष्टि से भी श०ब्रा० का बहुत महत्त्व है। प्रमुख रूप से शतपथ ब्राह्मण के निम्नलिखित दो महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं –

(क) शतपथ ब्राह्मण इस बात का प्रमाण है कि उसके धर्म और संस्कृति का केन्द्र कुरु –पांचाल देश है, क्योंकि इसमें कुरु राजा जनमेजय तथा पांचाल के ब्राह्मण गुरु आरुणि का उल्लेख मिलता है, यह भी ज्ञात होता है कि उस समय ब्राह्मण धर्म मध्यदेश के पूर्व में कौशल, जहाँ की राजधानी अयोध्या थी तथा विदेह जहाँ की राजधानी मिथिला थी, तक व्याप्त था। विदेहपति जनक का दरबार कुरु पाञ्चाल के विद्वानों से भरा रहता था।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

(ख) शतपथ ब्राह्मण में उस समय की भी स्मृतियाँ संचित हैं, जिस समय विदेह देश ब्राह्मण धर्म में दीक्षित नहीं हुआ था। प्रथम काण्ड के एक आरण्यक से आर्यों के पूर्वी विस्तार का परिचय मिलता है। विदेह के राजा माधव जिनके वंश गुरु गौतम राहुगण थे, किसी समय सरस्वती पर रहते थे। ब्राह्मण धर्म की वैश्वानर अग्नि पृथ्वी को जलाती हुई वहाँ से पूर्व की ओर चल पड़ी। पीछे–पीछे माधव और राहुगण भी चल दिए। अन्त में अग्नि सदानीरा (गण्डक) नदी पर आ पहुँची। इस नदी को अग्नि ने नहीं जलाया। ब्राह्मण धर्म में मानने वाले आर्य भी इस नदी के पार नहीं गये, क्योंकि अग्नि ने उसे नहीं जलाया था। पार की भूमि दलदली सी थी। ब्राह्मणों ने यज्ञ द्वारा अग्नि को प्रेरित किया और अग्नि में उस प्रदेश के प्रति रुचि उत्पन्न की। फिर माधव ने पूछा, हे अग्नि देव ! ''मैं कहाँ हूँ ?'' अग्नि ने उत्तर दिया, 'इस नदी के पूर्व में रहो।'

वैदिक संस्कृति के इतिहास में इन दोनों तथ्यों का अतीव महत्त्व है।[16]

प्रेरणादायक स्रोत के रूप में

ऐसा प्रतीत होता है कि यजुर्वेदीय ब्राह्मण ग्रन्थों के संकलित एवं संवलित हो जाने के उपरान्त इतर वैदिक सम्प्रदायों ने भी अपने में ब्राह्मण ग्रन्थों का अभाव अनुभव किया। फलस्वरूप विपुल संख्या में ब्राह्मण ग्रन्थ रचे जाने लगे। अतः इस दृष्टि से शतपथ ब्राह्मण का महत्त्व प्रेरणादायक स्रोत एवं अग्रणी के रूप में अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों की अपेक्षा सर्वाधिक है।

उपसंहार

उपर्युक्त विभिन्न दृष्टियों से इसकी महत्ता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विद्वानों ने एक स्वर से शतपथ ब्राह्मण के महत्त्व को स्वीकार किया है।[17] इस प्रकार शतपथ ब्राह्मण की इस महत्ता तथा विशिष्टता के कारण इसका सर्वांगीण अध्ययन अपेक्षित है। जो अध्येता शतपथ ब्राह्मण पढ़ लेता है, वह याज्ञिक क्रिया का सर्वश्रेष्ठ पण्डित कहा जाता है। अन्य सब ब्राह्मणों को यह स्वल्प काल में स्वायत्त कर लेता है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

इस शतपथ में वेदार्थ की कुंजी है, वैदिक विषयों का भरपूर ज्ञान है, वैदिक ऐतिह्य का प्रामाणिक कथन है। याज्ञवल्क्य का बनाया हुआ ब्राह्मण वस्तुतः अपूर्व है।[18]

वेद व्याख्या में इसकी उपादेयता का मूल्यांकन किया जाना नितान्त आवश्यक है। उसके माध्यम से भाष्यकारों के भाष्यों का मूल्यांकन करने में भी सहायता मिलेगी।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सन्दर्भ सूची

[1] India's Past, Macdonell, p. 46
[2] शतपथ ब्राह्मण, 2.2.4.1
[3] वही, 6.3.1.3
[4] वही, 2.4.4.1
[5] वही, 2.2.4.1, 2.5.1.1
[6] "Even the fundamental doctrine of the Upanisads as Sandilya enunciated it, is already found in the Satapatha Brahmana." (वैदिक साहित्य का इतिहास, डॉ० राममूर्ति शर्मा, पृ० 103)
[7] द्र० मोतीलाल शर्मा द्वारा रचित शतपथ का वैज्ञानिक भाष्य (जयपुर)
[8] "The work is more elaborate and richer in discussions than the other Brahmanas. The narrations are numerous and often detailed but always celerly withthe ritual theme. Some passages especially in book X. fore-shadom the speculations of the Upanishads and in fact in force of reasoning for surpas them". (लुई रेनू – वैदिक इंडिया, पृ० 27)
[9] ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर (हिन्दी अनुवाद), मैक्डॉनल, पृ० 197
[10] ऐ०ब्रा० 7, 13, 18
[11] ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर (हिन्दी अनुवाद), मैक्डॉनल, पृ० 200, 201
[12] वही, पृ० 201
[13] पुरुरवा उर्वशी तथा दुष्यन्त पुत्र भरत से सम्बन्धित दो आख्यान जो कालिदास के दो नाटकों के कथानक हैं, शत०ब्रा० से ही लिए गए हैं। (मैक्डॉनल, संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रथम भाग) पृ० 200
[14] शत०ब्रा० 1/1/1
[15] "The Satapatha Brahmana is thus a mine of important data and narratives." (Macdonell)
[16] वैदिक साहित्य का इतिहास, डॉ० राममूर्ति शर्मा, पृ० 101
[17] मैक्डॉलन, संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० 197
[18] डॉ० उर्वी, यजुर्वेदीय ब्राह्मणों के प्रमुख आख्यानों का समीक्षात्मक अध्ययन, पृ० 6